



CHETANA
INTERNATIONAL JOURNAL OF EDUCATION (CIJE)

Peer Reviewed/Refereed Journal
(ISSN: 2455-8729 (E) / 2231-3613 (P))

Impact Factor
SJIF 2023 - 7.286



Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

First draft received: 12.06.2023, Reviewed: 18.06.2023, Accepted: 26.06.2023, Final proof received: 30.06.2023

स्वदेशी तकनीकी ज्ञान के माध्यम से प्राकृतिक पर्यावरण की शिक्षा तथा सतत विकास अभ्यास की अभिप्रेरणा

डॉ राखी सावलानी

सहायक प्रोफेसर

पिल्लई कॉलेज ऑफ एजुकेशन एंड रिसर्च, न्यू पनवेल

Email-rakhisawlanee@gmail.com, Mob.- 9820162524

सारांश

स्वदेशी तकनीकी ज्ञान या पारंपरिक ज्ञान किसी भी समुदाय में मूलतः स्थानीय और ग्रामीण रूप का होता है। स्वदेशी तकनीकी ज्ञान का स्रोत हमारे पूर्वज हैं जिन्होंने अपने पिछले अनुभवों और प्रयोगों से यह तकनीक सीखी और इसे विकसित किया। स्वदेशी तकनीकी ज्ञान को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक मौखिक रूप से पारित होने वाली जानकारी के रूप में माना जाता है।

मुख्य शब्द - स्वदेशी तकनीकी ज्ञान, स्थानीय, सांस्कृतिक परंपरा, अनुभव, सतत कृषि, जैविक खेती, स्वदेशी भंडारण, फसल वृद्धि प्रवर्तक

प्रस्तावना

स्थानीय या स्वदेशी तकनीकी ज्ञान से तात्पर्य जानकारी, प्रथाओं और प्रतिनिधित्व के संचयी और जटिल निकायों से है जो स्थानीय समुदायों द्वारा बनाए और विकसित किए जाते हैं, जिनका प्राकृतिक पर्यावरण के साथ परस्पर क्रिया का लंबा इतिहास है। ऐसा ज्ञान सामूहिक रूप से स्वामित्व में है, कई पीढ़ियों में विकसित हुआ है, अनुकूलन के अधीन है और जीवित रहने के साधन के रूप में एक समुदाय के जीवन के तरीके में निहित है। यह स्थानीय है क्योंकि यह विशेष समुदाय में निहित है और व्यापक सांस्कृतिक परंपराओं के भीतर स्थित है। यह उन समुदायों में रहने वाले लोगों द्वारा उत्पन्न अनुभवों का एक समूह है। यह जगह-जगह भिन्न-भिन्न रूप के होते हैं, और लोकगीतों कहानियों और शास्त्रों आदि के माध्यम से यह ज्ञान फैलता है। स्वदेशी तकनीकी ज्ञान में नवाचार की अपार संभावनाएं हैं। भारत स्वदेशी समुदायों का देश है, जिनमें अधिकांश के पास अद्वितीय पारंपरिक ज्ञान और प्रौद्योगिकी आधार का अपना समूह है। यह पारंपरिक ज्ञान और प्रौद्योगिकियां समुदायों के समग्र सामाजिक आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। यह लेख विभिन्न समुदायों के स्वदेशी तकनीकी ज्ञान को दस्तावेज और संरक्षित करने की तत्काल आवश्यकता की और कदम उठाने की व्याख्या करता है, जिनमें से कई ज्ञान विलुप्त होने के कगार पर हैं।

स्वदेशी तकनीकी ज्ञान का उद्भव

स्वदेशी तकनीकी ज्ञान कुल ज्ञान और प्रथाओं का योग है जो जीवन के विभिन्न पहलुओं में स्थितियों और समस्याओं से निपटने में लोगों के संचित अनुभवों पर आधारित है। इस तरह का ज्ञान और अभ्यास एक विशेष संस्कृति के लिए विशेष हैं। इनमें से कई ज्ञान और प्रौद्योगिकियां, आधुनिक ज्ञान और प्रौद्योगिकी प्रणाली के बराबर हैं जो कि स्वदेशी समुदायों को आत्मनिर्भरता प्रदान करता है। स्वदेशी और आधुनिक ज्ञान के अभ्यास के बीच उचित गठबंधन का अभाव है। इस वजह से पारंपरिक ज्ञान, आधुनिक ज्ञान और प्रौद्योगिकी प्रणालियों के बीच एक उपयुक्त जुड़ाव से समाज को लाभ पहुंचाने की अपार संभावनाएं हैं। भारत में जनसंख्या वृद्धि से भोजन की मांग तेजी से बढ़ रही है। ये कृषि स्थिरता के साथ-साथ खाद्य और पोषण सुरक्षा को बनाए रखने में भी सक्षम हैं। इसलिए, तकनीकी को गैर-तकनीकी से अलग करना, तर्कसंगत को गैर-तर्कसंगत से अलग करना समस्याग्रस्त हो सकता है। इसलिए, जब अन्य स्थानों पर इस ज्ञान को स्थानांतरित किया जाता है, तो स्वदेशी तकनीकी ज्ञान को विस्थापित करने का संभावित जोखिम होता है। यह समाज के लिए सूचना का आधार है, जो संचार और निर्णय लेने की सुविधा प्रदान करता है। भारतीय कृषि परिदृश्य में अस्सी के दशक के अंत में टिकाऊ कृषि की अवधारणा के आगमन ने इस ज्ञान के प्रति रुचि पैदा की है जिसमें कृषि और संबद्ध

गतिविधियों से संबंधित समस्याओं को हल करने के लिए प्राकृतिक उत्पादों के उपयोग का महत्व है।

सतत कृषि में भूमिका

भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सतत कृषि अक्षय प्राकृतिक संसाधनों का सतत दोहन है जिसमें वार्षिक और बारहमासी फसल, कृषि-वानिकी और पशुधन के साथ-साथ संसाधनों के दीर्घकालिक रखरखाव के लिए आवश्यक संरक्षण उपाय शामिल हैं। वनों की कटाई, अधिक चराई, मरुस्थलीकरण, अत्यधिक कृषि गहनता, अत्यधिक मछली पकड़ने और सीमांत भूमि पर कृषि के कारण प्राकृतिक संसाधन आधार की कमी से कृषि उत्पादन क्षमता में गिरावट आती है जिससे कृषि की टिकाऊ/वहन क्षमता में भी कमी आती है। प्राकृतिक संसाधनों जैसे की मिट्टी, पानी, पोषक तत्वों की सीमाएँ हैं और इस संसाधन आधार के क्षरण को दूर करने और हमारे पारिस्थितिकी तंत्र को बनाए रखने वाली कृषि उत्पादन प्रणालियों को विकसित करने के लिए बेहतर प्रबंधन की आवश्यकता है। इस प्रकार, भूमि और पानी के उपयोग से जुड़े सभी तकनीकी नवाचारों के लिए हमारी कृषि प्रणालियों के निर्वाह को शामिल करते हुए स्थायी कृषि पर जोर दिया जाना चाहिए ताकि लंबे समय में संसाधन आधार की जैविक उत्पादकता पर कोई प्रतिकूल प्रभाव न पड़े। पारंपरिक प्रथाएँ प्राकृतिक संसाधनों के गैर-शोषणकारी और गैर-प्रदूषणकारी तरीकों के शास्त्रीय उदाहरण हैं, जो नीचे प्रस्तुत किए गए अनुसार स्थायी कृषि की ओर ले जाती हैं।

- **जल प्रबंधन** - भारत में कई किसानों ने परंपरागत रूप से जल संचयन उपायों को अपनाया जैसे कि खेत के तालाब, चेक डैम, बारिश के पानी को इकट्ठा करने के लिए गड्ढों में खोदे गए उथले कुएं, डायवर्सन चैनल (खुल), ईट से बने टैंक, पहाड़ी नदियों (पाइन्स), टैंक कैस्केड के माध्यम से निर्मित चैनल, बंधरा, खादिन, नाला चेक, पैट प्रणाली, फड प्रणाली, चौका प्रणाली और हवेली प्रणाली आदि। सिंधु घाटी सभ्यता की सदियों पुरानी सुव्यवस्थित जल आपूर्ति प्रणाली, भट्य एनीकट प्रणाली, विशाल टैंक जो कि मध्यकाल के दौरान दक्कन में विकसित किए गए थे जो आज भी लोगों की सिंचाई, पेयजल और जलीय कृषि की जरूरतों के लिए उपयोग में आ रहे हैं।
- **मृदा संरक्षण** - पारंपरिक किसानों ने कृत्रिम आदानों के उपयोग के बिना मिट्टी की संरचना, जल धारण क्षमता, पोषक तत्व और पानी की उपलब्धता में सुधार के तरीके खोजे हैं। उनकी प्रणालियाँ पारिस्थितिक कृषि के परिष्कृत रूप हैं जो विशिष्ट पर्यावरणीय परिस्थितियों के अनुरूप हैं।
- **पोषक तत्व प्रबंधन** - बिल्व रसायन का तैयार घोल जड़ों में लगाया जाता है, इससे मिट्टी में पोटैशियम बढ़ता है। गाजर घास स्वर के छिड़काव से मिट्टी में नाइट्रोजन की वृद्धि होती है। फूल रसायन के छिड़काव से मिट्टी में बोरॉन बढ़ता है। कैल्शियम अर्क के छिड़काव से पौधों में कैल्शियम बढ़ता है। हरड़ रसायन के छिड़काव से मिट्टी में आयरन बढ़ता है।
- **रोग नियंत्रण** - राख और अरंडी के तेल का मिश्रण नर्सरी में मृदा जनित रोगों से सुरक्षा प्रदान करता है। हल्दी पाउडर और लकड़ी की राख का मिश्रण पाउडर फफूंदी के इलाज के लिए पत्तियों पर धूल के रूप में प्रयोग किया जाता है। अदरक चूर्ण के छिड़काव से फफूंदी और अन्य कवक रोगों की घटनाओं को प्रभावी ढंग से रोका जा सकता है। टमाटर के

पौधे के आधार पर मुट्ठी भर बुझा हुआ चूना लगाने से भीगने की बीमारी का मुकाबला किया जा सकता है। मवेशी और बकरी के मूत्र में फफूंदनाशक गुण होते हैं। अंगूर पर फफूंद रोगों को नियंत्रित करने के लिए दो कप पशु मूत्र में पेपरमिट ऑयल और पानी का उपयोग किया जा सकता है।

- **कीट प्रबंधन** - धान के खेतों में कई जगहों पर 'टी' आकार के बांस के स्टैंड लगाए जाते हैं ताकि पक्षी उन पर बैठ सकें और चावल के कीटों के लार्वा और वयस्कों को खा सकें। बाजरे की पत्तियों के भीतरी भाग पर बैठे हरे पत्तों वाले होंपर को नियंत्रित करने के लिए बाजरे के खेतों में चुले की राख को झाड़ दें। चूने के घोल का छिड़काव करें, नीम के तेल के घोल या नीम की गिरी के अर्क, नीम की गुठली या नीम की खली का चूर्ण, एलोवेरा का छिड़काव किया जाता है।
- **देशी अनाज भंडारण संरचनाएं** - भारत सहित अधिकांश कृषि देशों में कृषि उत्पादों यानी खाद्यान्न का भंडारण नुकसान एक प्रमुख चिंता का विषय है। अधिकांश कृषि प्रधान देशों के किसानों को अपने अनाज को नुकसान पहुंचाने वाली विभिन्न स्थितियों से बचाने के लिए कड़ा संघर्ष करना पड़ता है। फिर भी, देश के कई हिस्सों में, किसान उत्कृष्ट भंडारण संरचनाओं के साथ स्वदेशी भंडारण तकनीकों का अभ्यास करते हैं। ये संरचनाएं पर्यावरण के अनुकूल, सस्ती और स्थानीय रूप से उपलब्ध हैं और इनसे स्वास्थ्य को कोई खतरा नहीं है।

स्वदेशी भंडारण संरचना जैसे कि कुलुमई एक आंतरिक अनाज भंडारण संरचना है। यह विभिन्न खाद्यान्नों, विशेष रूप से धान के अनाज (ओरिजा सैटिवा) के भंडारण के लिए एक अनिवार्य स्वदेशी भंडारण संरचना है। यह टैंक गाद, चावल की भूसी और धान के भूसे से बने पुल्टिस के साथ स्वदेशी रूप से निर्मित है। यह अनाज को कीटों और बीमारियों और यहां तक कि चूहों और कृन्तकों से भी बचाता है। संरचना में संग्रहीत धान के दानों की गुणवत्ता में बहुत अधिक गिरावट के बिना लगभग 3 वर्षों तक रखने की गुणवत्ता होगी। दूसरी है भूमिगत अनाज भंडारण पिट (गड्ढा) जो कि अनाज भंडारण के लिए एक बहुउद्देशीय और कम लागत वाली संरचना है। गड्ढा जमीन के नीचे आमतौर पर या तो घर के सामने या घर के पिछवाड़े में वर्गाकार, आयताकार या गोलाकार आकार में खोदा जाता है। इन गड्ढों का उपयोग मुख्य रूप से ज्वार, बाजरा, फिंगर बाजरा और अन्य छोटे बाजरा जैसे बाजरा के भंडारण के लिए किया जाता है। अनाज भरने से पहले चोकर या अन्य फसल के कचरे को गड्ढे के तल पर फैला दिया जाता है। फिर इसकी भीतरी दीवार को ज्वार या बाजरा के सूखे डंठल के साथ पंक्तिबद्ध किया जाता है। अस्तर के बाद, गड्ढे को अनाज से भर दिया जाता है और आयताकार पत्थर के ब्लॉक से ढक दिया जाता है। नमी से बचने के लिए संरचना को फिर से कपड़े से ढक दिया जाता है और अंत में सूखी रेत से ढक दिया जाता है। आमतौर पर इन भूमिगत गड्ढों में लगभग 3-5 महीने के लिए अनाज जमा किया जाता है।

जैविक खेती में महत्व

जैविक खेती में स्वदेशी तकनीकी ज्ञान की बड़ी भूमिका होती है जैसे कि कृत्रिम रसायनों से बचना, मिट्टी को जीवित रखना, स्थिरता पर जोर, इस कृषि को पूरा करने की क्षमता प्रदान करता है। जैविक खेती में स्वदेशी तकनीकी ज्ञान की कई प्रथाएँ हैं, जिनमें से कुछ हैं: बुवाई पूर्व अभ्यास, मिट्टी और जल प्रबंधन अभ्यास, कीट और रोग प्रबंधन, पोस्ट-फसल प्रबंधन।

- **अच्छे अंकुरण में स्वदेशी तकनीकी ज्ञान** बेहतर सहायक होते हैं- जैसे कि मूली के बीजों को बुवाई से पहले रात भर छाछ में भिगोया जाता है। खीरे के बीजों को गाय के ताजे गोबर 'गेंद' में रखा जाता है मरुस्थलीय क्षेत्रों में बालू के टीलों वाले क्षेत्रों में ऊंट द्वारा खींची गई हल के पीछे चना बोया जाता है।
- **स्वदेशी तकनीकी ज्ञान द्वारा खरपतवार प्रबंधन** - नीम के बीज से खरपतवार वृद्धि को नियंत्रित करने में मदद मिलती है।
- **फसल वृद्धि प्रवर्तक** - बकरी का गोबर, मूत्र, दूध, दही, घी विकास प्रवर्तक के रूप में उपयोग किया जाता है।
- **मल्लिचंग** - पेड़ की पत्तियां (करंज-पोंगामिया पोन्नाटा) और धान के भूसे का उपयोग मल्लिचंग सामग्री के रूप में किया जाता है। यह मिट्टी की नमी को संरक्षित करता है और मिट्टी को ठंडा रखता है जो अनुकूल परिस्थितियां प्रदान करता है। यह मल्लिचंग फसल को बढ़ाने के लिए कार्बनिक पदार्थ के रूप में कार्य करते हैं।
- **स्थानांतरण खेती**- इसे ड्रम खेती/स्लैश एंड बर्न खेती भी कहा जाता है। पेड़ों को काट कर जला दिया जाता है और बीज पहली वर्षा के बाद ही बोए जाते हैं। मिट्टी के कटाव को नियंत्रित किया जाता है और समोच्च बांधों के निर्माण से उर्वरता को बनाए रखा जाता है जिससे अक्सर मिट्टी में पैदा होने वाली बीमारियों की घटनाओं में कमी आ सकती है।
- **छत या बांध की खेती** - घाटियों और तलहटी पहाड़ियों में ढलान के आर-पार बेंच टैरेस बनाए गए हैं। यह मिट्टी के कटाव को बनाए रखने और ढलानों में बारिश के पानी को बनाए रखने और तलहटी में अपवाह जमा करने में मदद करता है।
- **मृदा उर्वरता प्रबंधन** - मध्य प्रदेश में, गाय के गोबर, भेड़, बकरी और ऊंट फेकल छर्रो, लकड़ी की राख, पशु मूत्र, नाइट्रोजन फिक्सिंग फलीदार फसलों को अनाज के साथ मिश्रित/अंतःफसल फसलों का उपयोग करके मिट्टी की उर्वरता को नवीनीकृत किया जाता है। बायोचार के इस्तेमाल से मिट्टी के गुणों में सुधार का सीधा असर फसल और उपज में नजर आता है। इससे किसानों की रासायनिक खाद पर निर्भरता और खेती की लागत घटती है। लिहाजा, बायोचार को किसानों की आमदनी बढ़ाने का आसान और अहम जरिया माना गया है।
- **कीट और रोग प्रबंधन** - तुलसी:- चावल के विस्फोट को नियंत्रित करें चौकू, अमरूद में कीट का नियंत्रण। मेथी:- भिंडी के कीट का नियंत्रण जैसे। फल छेदक। कैरोसीन तेल:- पर्वतारोही में चींटी को नियंत्रित करने के लिए दीमक को नियंत्रित करने के लिए। स्टोर ऑयल:- भंडारित कपास में सफेद मक्खी का नियंत्रण- अरहर में दाना कीट नियंत्रण। मिर्च:- गेहूं के चूहे पर नियंत्रण के लिए सूखी मिर्च का धुआं। धान की नर्सरी में थ्रिप्स के हमले को रोकने के लिए प्रयोग किया जाता है अदरक, कपास में कीटों का नियंत्रण। नींबू:- बालों वाली सुंडी का नियंत्रण कपास में एफिड नियंत्रण। प्याज:-मक्का में कीट एवं रोग नियंत्रण के लिए प्रयोग करें गन्ने में कीट नियंत्रण। गुड़ या चीनी:- कपास में कीट का नियंत्रण मटर में फली छेदक का नियंत्रण। नमक:- मटर में मुरझान का नियंत्रण धान में खैरा रोग का नियंत्रण। दीमक नियंत्रण के लिए नीम की खली का उपयोग नीम की टहनी से सरसों में एफिड्स का नियंत्रण।

- **फसल के बाद का प्रबंधन** - अनाज की नमी को कम करने के लिए यह पारंपरिक तरीका है। धूप में सुखाने की विधि है।
- **भंडारण** - पारंपरिक भंडारण विधियां हैं - 1. बारदानों में बारानी बैग में साधारण नमक के साथ लाल चने का भंडारण। बोरे में कपूर का उपयोग करके अनाज का भंडारण। रागी को नीम के पत्ते के साथ बोरे में रखें। 2. मिट्टी बिन भंडारण उदाहरण अनाज का भंडारण। 3. वुडन बॉक्स स्टोरेज उदाहरण गोबर के साथ सब्जी के बीज का भंडारण धान का भंडारण।
- **पंचगव्य संघटन**: घी, दूध, दही, गोबर और गोमूत्र एक एकड़ भूमि में 6 लीटर पंचगव्य का प्रयोग पौधे को पोषक तत्व प्रदान करता है।

रासायनिक एवं जैविक खेती से पर्यावरण का विनाश होता है। परंतु कम लागत खर्च प्राकृतिक खेती से विनाश रुकता है और प्राकृतिक संसाधनों की शाश्वतता बढ़ती है। कम लागत खर्च ज्यादा उपज उत्तम गुणवत्ता अच्छी मांग योग्य मूल्य ऐसे खेती से गाँव से शहर होनेवाला मानवी स्थलांतर रुक सकता है। देश के हर किसान ने कम लागत खर्च प्राकृतिक खेती एवं आध्यात्मिक खेती का स्वीकार करना चाहिए।

निष्कर्ष

यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि स्वदेशी तकनीकी ज्ञान आधारित प्रथाएं जैविक कृषि को पूरा करने की अपनी क्षमता प्रदान करती हैं जहां खेती के लिए जैविक तरीकों को अपनाया जाता है। कृषि प्रणाली के विभिन्न घटकों में उपयोग की जाने वाली स्वदेशी तकनीकें ज्यादातर जैविक, पर्यावरण के अनुकूल, टिकाऊ, व्यवहार्य और लागत प्रभावी हैं। स्वदेशी तकनीकी ज्ञान आधारित प्रथाएं जैव गतिकी और प्राकृतिक खेती की अवधारणा को आगे बढ़ाने में मदद करेंगी जहां मिट्टी-स्वास्थ्य निर्माण प्रक्रिया को प्रकृति पर छोड़ दिया जाता है, क्योंकि स्वदेशी तकनीकी ज्ञान के लिए इनपुट मिट्टी के उत्पादों से तैयार किए जाते हैं और मिट्टी में वापस आ जाते हैं। खाद या मिट्टी और पौधों के स्वास्थ्य की रक्षा करने वाले एजेंटों के रूप में। स्वदेशी तकनीकी ज्ञान सामाजिक रूप से वांछनीय है, आर्थिक रूप से वहनीय, टिकाऊ है, इसमें न्यूनतम जोखिम शामिल है और पर्यावरण के अनुकूल संसाधनों के कुशल उपयोग पर ध्यान केंद्रित है। स्वदेशी तकनीकी ज्ञान स्थायी जमीनी नवाचारों में एक आवश्यक भूमिका निभाता है। इस तरह के जमीनी स्तर पर नवाचार मुख्य रूप से विभिन्न क्षेत्रों में विशेषताओं, स्रोतों, शामिल अभिनेताओं आदि के संबंध में भिन्न होते हैं। हालांकि, यह संभव है कि लचीलेपन, संशोधन और आपसी सम्मान और विश्वास के माध्यम से, पारंपरिक ज्ञान विशेषज्ञ आधुनिक वैज्ञानिक संस्थानों के विशेषज्ञों के साथ काम कर सकते हैं और समकालीन समस्याओं के लिए अधिक प्रभावी समाधान उत्पन्न कर सकते हैं। आज के संदर्भ में, स्वदेशी नवाचार का मूल्यांकन और इसे लोकप्रिय बनाने की तत्काल आवश्यकता है। सरकारी योजनाओं और अनुसंधान और विकास गतिविधियों को स्वदेशी नवप्रवर्तकों तक पहुंचना चाहिए। इसलिए, आज की आवश्यकता राष्ट्रीय स्तर पर एक नीव स्थापित करने की है जो नवाचारों के राष्ट्रीय रजिस्टर के निर्माण में मदद करती है, पेटेंट के लिए आवेदन दाखिल करती है, स्वदेशी ज्ञान और गैर-भौतिक प्रोत्साहन जैसे मान्यता या सम्मान के आधार पर उद्यमों के लिए सूक्ष्म उद्यम पूंजी सहायता प्रदान करती है। पारंपरिक और आधुनिक ज्ञान और प्रौद्योगिकी प्रणालियों के बीच एक उपयुक्त गठबंधन में खाद्य सुरक्षा प्रदान करने की अपार संभावनाएं हैं।

संदर्भ ग्रंथों की सूची

- फसल पीड़क कीटए हिन्दी नेशनल बुक ट्रस्ट 1995. अनुवाद: हनुमान सिंह पंवार ए एस. प्रधान.
- राजीव दीक्षित. 2016. स्वदेशी चिकित्सा. बीमारियों को ठीक करने के आयुर्वेदिक नुस्खे, स्वदेशी
- बायोचार यानी मिट्टी को उपजाऊ बनाने की घरेलू और वैज्ञानिक विधिः किसन ओफ इंडिया स्पेशल
- स्वदेशी चिकित्सा सर डॉ. अजीत मेहता कल्याण चिकित्सा प्रकाशन जयपुर 1984
- स्वदेशी उत्पाद बनाने कि विधिए भाग 2ए बिना केमिकल उत्पादए राजीव दीक्षित, प्रकाशन सेवा ग्राम वर्धा

स्वदेशी विचार यात्रा ऑडियो बुक

- सभी मौसमी फसल के बारे में जानें।
- प्रकृति का पोषण शास्त्र समझें ।
- विविध समस्याएं और उसके उपाय जानें।
- स्वदेशी विचार यात्रा ।
- जल प्रबंधन कैसे करें।
- वाफसा – वृक्षाकार प्रबंधन कैसे करें।
- आध्यात्मिक कृषि का मूलतत्व जानें।
- विविध कृषि पद्धति जानें।
- आध्यात्मिक कृषि का दर्शन समझें।
- फसल सुरक्षा कैसे करें।
- कम लागत प्राकृतिक
- कृषि विज्ञान